एम० ए० द्वितीय सेमेस्टर
पंचम पत्र
प्राकृत काव्य साहित्य का इतिहास

इकाई - I महाकाव्य

महाकाव्य शान्ति के परिपूर्ण क्षणों में रची गयी कोमलशब्दों, मधुर कल्पनाओं तथा उद्रेकमयी भावनाओं की भाषा है। सहजरूप में तरंगित भावों का मधुर प्रकाशन है। इस शब्द में यों कहा जा सकता है कि 'काव्य भाषा के माध्यम से अनुभूति और कल्पना द्वारा जीवन का पुनः सृजन' है। प्राकृत भाषा में महाकाव्य प्रणयन उसके प्रादुर्भाव काल से ही होता आ रहा है। प्राकृत भाषा जन भाषा थी, अतः यह जनता का साहित्य है। वैदिक यज्ञ-समाज और पौराणिक ब्राह्मण समाज की उन विकृतियों के प्रति प्राकृत भाषा के आचार्यों ने अपनी विचार असमति प्रकट की। जिसमें राजाओं, सामन्तों एवं पुरोहितों का अखंड साम्राज्य था। सामान्य जनता को अपने विचार और विश्वास प्रकट करने का अवसर नहीं दिया जाता था। समज में एक प्रकार की घुटन उत्पन्न हो रही थी। सम्भ्रान्तवाद का व्यापक प्रभाव सभी पर पड़ रहा था। दलित और हीन समाज में कुंठा पा रहे थे। ऐसे परिस्थिति में प्राकृत के मुनियों ने वैदिक साहित्य के समान्तर एक नयी विचारधारा को प्रादुर्भूत किया।

फलतः प्राकृत आगम ग्रन्थों में सिद्धान्तों के साथ आख्यान, सांस्कृतिक उपाख्यान, ऐतिहासिक कथाएँ, रूपकात्मक आख्यायिकाएँ एवं लोककथाओं के मूलरूप भी समाविष्ट हुए।

प्राकृत महाकाव्यों में निम्नलिखित तत्व पाये जाते हैं -
(1) कथात्मकता और छन्दोबद्धता।
(2) सर्गबद्धता या खण्डविभाजन और कथा का विस्तार।
(3) जीवन के विविध और समग्र रूप का चित्रण।
(4) लोकगीत और लोककथाओं के अनेक तत्वों के

Scanned with CamScanner

सम्मिश्रण से संगठित कथानक निर्मा निर्माण।
(5) शैली की गम्भीरता, उदात्तता और मनोहारिता

महाकाव्य कलात्मक प्रतिभा की सर्वोत्तम देन है। इनमें जातीय गुणों, सर्वोत्कृष्ट उपलब्धियों और परम्परागत अनुभवों का पंजीभूत ऐसा रसात्मक रूप दृष्टिगोचर होता है; जो समग्र सामाजिक जीवन का प्रतिनिधि है। यद्यपि उसके बाह्य स्वरूप में देश-काल के भेद के साथ निरन्तर परिवर्तन होता रहता है, तो भी उसके आन्तरिक मूल्य और स्वाभाविक गुण शाश्वत एवं चिरन्तन होते हैं। संक्षेप में महाकाव्य वह छन्दोबद्ध कथात्मक काव्यरूप है, जिसमें संक्षिप्त कथा-प्रवाह, अलंकृत वर्णन और मनोवैज्ञानिक चित्रण से युक्त ऐसा सुनियोजित, साङ्गोपाङ्ग और जीवन्त कथानक होता है, जो रसात्मकता या प्रभान्विति उत्पन्न करने में पूर्ण सक्षम हो।

प्राकृत महाकाव्यों के उद्देश्य के मूल में कोई महत्प्रेरणा रहती है तो जो समस्त महाकाव्य को प्राणवन्त बनाती है। प्रेरणा उत्पन्न करने वाली वस्तुएँ और घटनाएँ बहुत-सी हो सकती हैं, या उनकी अनुभूति की गहराई सबके लिये एक समान नहीं हो सकती है। प्राकृत महाकाव्यों में उपदेश और धर्मतत्व भी यत्र-तत्र बिखरा मिल सकता है, पर वास्तव में उनका अवसान भी किसी न किसी रस में हो जाता है। इसमें सन्देह नहीं कि कवि का मानसिक धरातल जितना ही ऊँचा होगा, उतनी गरिमा और उच्चता उसके महाकाव्य में समाविष्ट होगी। महाकाव्य के सम्बन्ध में लक्षण ग्रन्थों में बताया गया है कि गुरुत्व के अभाव में कोई

Scanned with CamScanner

भी महाकाव्य महाकाव्य की श्रेणी में परिगणित नहीं किया जा सकता। गुरुत्व का समवाय उच्च विचारों से होता है।

महाकाव्य में युगविशेष के समग्र जीवन का चित्रण किसी कथावस्तु के माध्यम से होता है। जिसका चरम बिन्दु कोई महत्वपूर्ण कार्य और आश्रय कोई प्रधान पात्र होता है। चिन्तक कवि का मानस-क्षितिज इतना व्यापक और विशाल होता है कि युग का समग्र रूप उसमें स्वभावतः समाविष्ट हो जाता है। मानव प्रकृति, मानसिक दशाएँ, मानवीय प्रवृत्तियाँ और उपलब्धियाँ, मानव और प्रकृति का सम्बन्ध और संघर्ष, मानव-मानव का पारस्परिक सम्बन्ध और संघर्ष एवं तत्कालिन सामाजिक कार्यव्यापार काव्य में समाविष्ट होकर अपने युग का सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत करते हैं। अतः महाकाव्य में विविध घटनाओं का प्रवाह फल प्राप्ति की ओर ही अग्रसर रहता है।

महाकाव्य: यह अनेक ग्रन्थो के रूप लिखा गया है यह सभी महाकाव्य हैं

(1) सेतुबन्ध, (2.) गउडवहो, (3.) दपाश्रयकाव्य

(4) लीलावई (5) सिरिचिन्धकव्व

(6) सोरिचरित (शौरिचरित)